By - Rahul Kumar Jha.
Dept. of Political Science.
16-04-2020

# Lecture- 3



Topic - Political Thoughts of Aurobindo paper-II

Class - B.A. degree-I (Hons)
Unit - 7

Subject - Political science

Date - 16 Apr. 2020

By Rahul Kumar Jha.

## अरविन्द घोष के राजनीतिक विचार (Political Thoughts of Aurobindo):-

### आध्यात्मिक राष्ट्रवाद (Spiritual Nationalism)

:- अरविन्द घोष एक सच्चे राष्ट्रवादी थे। उनकी इच्छा थी कि भारत को अतिशीघ्र ही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। उनके चिंतन का मुख्य ध्येय अधिक व्यक्तियों की सुख की बजाय सभी का अधिकतम हित था। उन्होंने गीता, वेदों, उपनिषदों से ज्ञान प्राप्त करके ऐसी विधियों की खोज की जो भारत को

स्वतंत्र कराने में अहम भूमिका निभा सकती थी। इसलिए उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा आध्यात्मिकवाद पर आधारित थी।

अरविन्द घोष का राष्ट्रवाद का सिद्धांत बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है। अरविन्द ने राष्ट्रवाद को प्राचीन संस्कृति और परम्परा के अनुरूप ढालकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। यद्यपि अरविन्द के समकालीन विचारकों व नेताओं का ध्यान भी राष्ट्रवाद की तरफ था, लेकिन उन्होंने आत्मचेतना की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। अरविन्द ने बहुत ऊंचे राष्ट्रवाद की नींव रखी, देशवासियों में स्वाभिमान को जगाया और उनके सामने आत्मा का चित्र स्पष्ट किया।

उनके लिए राष्ट्र केवल एक भौगोलिक सत्ता या प्राकृतिक भूखण्ड मात्र नहीं था, बल्कि एक मां के समान था। उन्होंने राष्ट्र को एक जीवित रूप में देखा और उसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर खड़ा किया। उनके अनुसार राष्ट्र एक मां

मां की तरह थी।

उनके अनुसार राष्ट्रवाद एक धर्म है जो ईश्वर की ओर से आया है। उन्होंने कहा राष्ट्रवाद किसी एक भाषा, जाति या धर्म के लोगों का राष्ट्रवाद नहीं है। उनका राष्ट्रवाद हिन्दू राष्ट्रवाद नहीं है। उनकी राष्ट्रभक्ति मानव प्रेम व विश्व-बन्धुत्व पर आधारित है। उनके अनुसार राष्ट्रवाद मानव के सामाजिक तथा राजनीतिक विकास के लिए जरूरी है। अन्ततोगत्वा एक विश्व संघ के द्वारा मानव की एकता स्थापित होनी चाहिए और इस आदर्श की प्राप्ति के लिए आध्यात्मिक नींव का निर्माण धर्म का निर्माण मानव धर्म और आंतरिक एकता की भावना के द्वारा ही किया जा सकता है।

उनका कहना था कि हिन्दू धर्म एक शाश्वत कार्य है जो सबको अपने में समेटता है। इसमें किसी प्रकार की संकीर्णता नहीं है। यह ईश्वर के स्वामित्व पर बल देता है इसलिए हमें अपने शाश्वत धर्म का पालन करते हुए सभी धर्म व जातियों को मिलाकर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रयास करने चाहिए।

CHAPTER END

CHAPTER END